पशुओं में गर्भाधान कब करायें

डा0 शिव प्रसाद एवं डा0 एस0 सी0 त्रिपाठी
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,पन्तनगर– 263145 (ऊधमसिंह नगर)

गाय एवं भैसों में साधारणतया मदचक्र 21 दिन का होता है किन्तु इसकी अवधि 18 दिन से 24 दिन तक देखी जा सकती है। मदचक्र के समय गाय या भैंस के बच्चेदानी एवं अंडाशय में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन होते हैं जिसकी वजह से पशुओं में बाहरी लक्षण भी प्रदर्शित होते है। अतः पशुपालकों को यह विदित होना अति आवश्यक है कि पशुओं के उचित गर्भाधान का समय कब है जिससे पशु आसानी से गर्भ धारण कर सके तथा पशुपालकों को अधिक से अधिक लाभ हो सके।

पशुओं के गर्म होने के लक्षण

1– पशुओं का जोर–जोर से आवाज करना,
2– पशु का बैचेन होना तथा चारा खाना बंद कर देना,
3– पशु का बार–बार तथा कम मात्रा में पेशाब करना,
4– पूंछ को ज्यादा समय तक बार–बार उठाना,
5– बच्चेदानी के बाहरी भाग में सूजन होना,
6– बच्चेदानी द्वारा लसलसे पदार्थ का बाहर निकलना,
7– चिपचिपे पदार्थ का पशु के दोनों पुट्ठों में लगा होना,
8– पशु का बार–बार अन्य पशु पर चढ़ना तथा अन्य पशुओं द्वारा उस पर चढ़ने पर शान्त खड़े रहना।

उपर्युक्त लक्षणों को देखकर पशु के मदकाल को आसानी से पहचाना जा सकता है तथा यदि पशु सुबह यह लक्षण प्रदर्शित करता है तो सायंकाल गर्भाधान कराना चाहिये क्योकि अण्डक्षरण की प्रक्रिया मदकाल पूरा होने के 10–12 घंटे के उपरान्त होती है। इसलिये यदि पशु सायंकाल में गर्म होने के लक्षण प्रदर्शित करता है तो गर्भाधान दूसरे दिन सुबह कराना चाहिये। ऐसा करने से पशुओं में गर्भधारण अधिक होता है क्योंकि यह समय शुक्राणु तथा अण्डे के मिलन का सर्वोत्तम होता है।

कुछ पशुओं में देखा गया है कि मदकाल समाप्त होने के समय या उससे पूर्व बच्चेदानी से कुछ मात्रा में रक्तस्राव होता है जिससे पशुपालक अत्यन्त चिन्तित हो जाते है लेकिन यह असामान्य घटना नहीं है। यह ज्यादा दूध देने वाले एवं स्वस्थ पशुओं में ही देखी जाती है जो कि बच्चेदानी में हार्मोन्स के स्तर में

परिवर्तन की वजह से सामान्य एवं स्वभाविक प्रक्रिया हैं। इसे अस्वस्थ या किसी बीमारी का द्योतक नहीं माना जाना चाहिये। ऐसे पशु सामान्य ढंग से गर्भधारण करते हैं तथा दुग्ध उत्पादन करते हैं।

वर्गीकृत वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या कम होने के कारण मदकाल का सही आकंलन अत्यन्त आवश्यक है जिससे उपयुक्त समय पर गर्भाधान कराया जा सके।

यदि सम्भव हो तो वगीकृत वीर्य बछियों में प्रथम ब्यात के बाद ही करवाना उचित होगा।

वर्तमान में पशु प्रजनन में वर्गीकृत वीर्य (लिंग आधारित) का प्रयोग किया जा रहा है। इस वीर्य से अधिकांशतः मादा बच्चे ही पैदा होते है तथा इनकी उत्पादन क्षमता एवं उत्पादकता भी काफी अधिक रहती है।

पशुपालक अपने क्षेत्र के पशुचिकित्सा अधिकारी से मिलकर इस विषय में क्षेत्र विशेष की प्रजनन नीति के अनुसार फायदा ले सकते हैं।